1

तोरे दर्शन सों

तोरे दर्शन सों, मेरो मनुवा अति हर्षाय ।।
शान्त छवि लखि शान्त भाव है, आकुलता मिट जाय।
तोरे दर्शन सों, मेरो मनुवा अति हर्षाय ।।टेक॥

जबलौं चरण निकट नहिं आया, तबलौं आकुलता थाय ।
अब आवत ही निज निधि पाया, नित नव मंगल पाय ।।1॥
तोरे दर्शन सों, मेरो मनुवा अति हर्षाय ।।टेक॥

'बुधजन' अर्ज करै कर जोरे, सुनिये श्री जिनराय ।
जबलौं मोक्ष होय नहिं तबलौं, भक्ति करूं गुण गाय ।।2॥
तोरे दर्शन सो, मेरो मनुवा अति हर्षाय ।

हे प्रभु! आपके दर्शन करसे मेरा मन अत्यंत प्रसन्न हो जाता है, आपकी शांत छवि देखकर मेरे परिणाम शांत हो जाते हैं और आकुलता का अंत हो जाता है। हे प्रभु! आपके दर्शन से मेरा मन अत्यंत प्रसन्न हो जाता है॥टेक॥

जब तक मैंने आपके चरणों की शरण प्राप्त नहीं की थी, तब तक मुझे आकुलता हो रही थी और अब जैसे ही मैंने आपके चरणों का सानिध्य पाया तो ऐसा लगा कि मानो मुझे अपनी आत्मा की निधि प्राप्त हो गई है और मुझे हर समय मंगल ही भासित होता है॥1॥

कविवर बुधजनजी कहते हैं कि हे जिनदेव! मैं हाथ जोड़कर आपसे प्रार्थना करता हूँ, कृपया मेरी प्रार्थना सुनिए। मेरी यही भावना है कि जब तक मुझे मोक्ष प्राप्त न हो तब तक मैं आपकी भक्ति व गुणगान करता रहूँ॥2॥